पाठ 5

लौह पुरुष सरदार पटेल

● संकलित

आइए, सीखें : सरदार पटेल के चारित्रिक गुणों का परिचय । ♦ एक वचन और बहु वचन का ज्ञान ।

विश्व के प्रमुख राष्ट्र-निर्माताओं में बड़े सम्मान के साथ लिए जाने वाले नामों में 'सरदार पटेल' का नाम अपना विशिष्ट स्थान रखता है। सरदार वल्लभ भाई पटेल का व्यक्तित्व, असाधारण प्रतिभा का धनी, विशिष्ट बुद्धिमत्ता, अप्रतिम प्रशासनिक क्षमता तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सफलता के लक्ष्य को प्राप्त करने की अद्‌भुत क्षमता से युक्त था। वे स्वाभाव से अत्यधिक वीर, निर्भय, दृढ़ निश्चयी, परिश्रमी तथा लगनशील थे। इसी कारण उन्हें लौह पुरुष की संज्ञा प्रदान की गई।

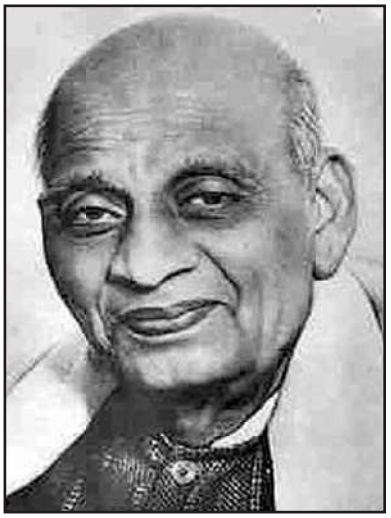

सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को नाडियाड गुजरात में हुआ था। इनके पिता का नाम जवेर भाई तथा माता का नाम लाडबाई था। इन्होंने नाडियाड हाईस्कूल से 1897 में मेट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की।

सरदार पटेल के विशिष्ट मानवीय गुण बचपन से ही प्रकट होने लगे थे। एक बार वे खेती के कार्य में सहयोग देने के लिए अपने पिताजी के साथ खेत पर गए । पिताजी हल चला रहे थे। वे उनके पीछे अपना कार्य करते हुए पहाड़े भी स्मरण करते जा रहे थे। पहाड़े कंठस्थ करने में इतने तल्लीन हो गए कि डाब नामक घास का तीक्ष्ण बड़ा कांटा, कब उनके पैर में चुभ गया, उन्हें पता ही न चला। बालक के पैर से बहते रक्त को देखकर पिता दंग रह गए। उन्होंने बालक की दृढ़ता को सराहते हुए पैर से कांटा निकाला और उस पर काड वृक्ष की पत्तियाँ रगड़ दीं, जिससे खून बहना बन्द हो गया ।

व्यक्तिगत जीवन में सरदार पटेल बड़े ही सहृदयी एवं सच्चे मित्र के रूप में विख्यात थे। विषम परिस्थितियों में किसी भी मित्र के काम आने के लिए वे अपने आप को वचन-बद्ध मानते थे। सार्वजनिक जीवन में लौह-पुरुष की संज्ञा प्राप्त करके भी उनका हृदय नारियल के समान बाहर से कठोर और अन्दर से कोमल था। वे किसी भी विषय, भाव या विचार को तत्काल समझ जाते तथा अगले ही क्षण तदनुरूप कार्यवाही करते थे।

सरदार पटेल प्रतिक्षण सजग, सचेष्ट और स्फूर्तिवान रहते थे। वे स्वस्थ हों या अस्वस्थ, सोते हों या

शिक्षण संकेत -

♦ शुद्‌ध उच्चारण का ध्यान रखते हुए पाठ का वाचन करें तथा बच्चों से कराएँ। ♦ सरदार पटेल के व्यक्तित्व के अन्य गुणों से भी बच्चों को परिचित कराएँ। ♦ कठिन शब्दों के अर्थ एवं पर्यायवाची शब्दों से वाक्य बनवाएँ।

जागते, हर क्षण हर स्थिति मे उनका ध्यान राष्ट्र की तत्कालीन महत्व की समस्याओं एवं उनके समाधान पर ही लगा रहता था। स्वतंत्रता-संग्राम काल में सत्याग्रह आन्दोलन एवं बारडोली में किसानों को संगठित कर लगान माफ कराने जैसी उल्लेखनीय सफलताओं में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा, तभी से जनता आपको सरदार के नाम से संबोधित करने लगी ।

राष्ट्रहित के लिए अर्जित बड़ी-बड़ी सफलताओं के कारण सरदार पटेल ने जितनी महानता अर्जित की, उससे कहीं अधिक अपने मानवीय गुणों के कारण वे महान बने। उनके पास हाजिर-जवाबी तथा विनोदप्रियता का अक्षय और असीम कोष था। अपने सहायकों और अनुयायियों के द्वारा कभी कोई अपराध हो जाने पर भी वे उन पर कृपा किया करते थे। वे उनकी देखभाल और चिंता पितृवत् करते थे। वे एक बार जिस पर विश्वास कर लेते, फिर कभी भी उस पर सन्देह नहीं करते थे। '' विश्वाास से विश्वाास उत्पन्न होता है'' - सरदार तथा उनके अनुयायियों के परस्पर मधुर संबंधों का यही रहस्य था।

सरदार पटेल सुनते अधिक थे और बोलते बहुत कम। वे जब बोलते थे तो किसी महत्वपूर्ण कार्य के क्रियान्वयन की घोषणा करते थे, जो मानो युद्ध-घोष के समान ही होता था। किसी भी विषय पर उनकी सहमति प्राप्त करना आसान नहीं था। पूरी तरह चिंतन-मनन करके ही वे अपनी स्वीकृति प्रदान करते थे।

भारत के डेढ़ सौ वर्ष के दासता-काल में पटेल जैसा व्यक्तित्व उत्पन्न नहीं हुआ, जो मनुष्य की अन्तर्निहित शक्ति को पहचानने में गलती न करते हुए कार्य करे तथा उसकी विस्तृत रूप रेखा एंव संभावनाओं को भांप सके। सरदार पटेल का मस्तिष्क संकेतात्कम ज्ञान कोष के समान था। ऐसा प्रतीत होता था मानों उनके मस्तिष्क में प्रत्येक बात अपनी सूची के अनुसार लेबिल लगी हुई व्यवस्थित रखी रहती थी और अवसर आते ही तात्कालिक निर्णय के साथ शीघ्रतापूर्वक प्रकट होकर अपना कार्य करती थी। किसी भी बिन्दु के छूटने की कहीं कोई संभावना नहीं रहती थी।

यद्यपि शक्ति को हथियाकर उसका नियंत्रण एवं सटीक संचालन करना तथा हठी विद्रोहियों को विनयानुशासन में लाना उन्हें भली प्रकार से आता था, किन्तु उन्होनें कभी भी शक्ति प्राप्त करने की लालसा नहीं की। वह तो उनके हाथ में बलात् थमा दी जाती थी। किसी भी कार्य की पूर्णता के अंतिम क्षण तक वे अपने-आपको पर्दे के पीछे ही रखते थे; किन्तु जिस युद्ध का उनको सेनापति बनाया जाता; उसमें उनकी आज्ञा अन्तिम होती और उसके दाँव-पेंच भी उन्हें आते थे। वे युद्ध-कौशल दिखलाना तथा अंतिम चोट करना भी जानते थे। व्यक्तिगत ईर्ष्या, द्वेष तथा विरोधी व्यक्तियों अथवा दलों की निर्बलताओं को स्मरण रखकर वे अपने मस्तिष्क में सावधनी पूर्वक लेखा-जोखा रखते थे और उसी के द्वारा वे अपने विरोधियों को पछाड़ दिया करते थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् प्रथम गृहमंत्री के पद को सुशोभित करते हुए जो महत्वपूर्ण कार्य सरदार पटेल ने किए; उनमें से प्रमुख है- देशी रियासतों का एकीकरण। अंग्रेज भारत छोड़ते समय पाँच सौ से अधिक रियासतों को स्वतंत्र छोड़ गए थे। स्वतंत्र भारत के सामने इनकी समस्या ने विकट रूप धारण कर लिया। सरदार पटेल ने अपनी कुशल राजनीतिक सूझ-बूझ से इन सभी रियासतों का एकीकरण करके उस समस्या का निदान चुटकियों में कर डाला।

सरदार पटेल एक उदार नेता,विनयशील अनुयायी, कृपालु मित्र एवं श्रेष्ठ राष्ट्र-निर्माता थे। वे अपने चरण,दृढ़ता के साथ भूमि पर जमाकर राष्ट्र निर्माण में सम्पूर्ण शक्ति से योगदान देते थे। जीवन के अंतिम दिनों में वे अस्वस्थता काल में चिकित्सकों के चेतावनी देने पर भी कि ''उनकी स्थिति खतरनाक है; पूर्ण विश्राम करें,'' बिना रूके निरन्तर कार्य करते रहे; क्योंकि उनकी यह महती आकांक्षा थी कि भारत अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करने में सबल और सुयोग्य बन जाए। उनकी भावना थी कि पूर्व में किया गया श्रम तो स्वराज्य के लिए था; किन्तु आज जब हमें स्वराज्य प्राप्त हो गया है, उससे भी अधिक श्रम की आवश्यकता सुराज के लिए है, तभी देश का उत्थान सही अर्थों में हो सकेगा और तभी स्वतंत्रता के लिए किए गए त्याग और बलिदान की सार्थकता होगी।

नए शब्द

तत्कालीन = उस समय। **सर्वसत्ता सम्पन्न** = पूर्ण प्रभुता प्राप्त । **अनुयायी** = पीछे चलने वाला,मत को मानने वाला। **अप्रतिम** = बेजोड़,अनुपम । **इंडेक्स कार्ड** = विषय के अनुसार वर्गीकृत सूची कार्ड। **हठी** = जिद्दी। **महती आकांक्षा** = बड़ी इच्छा।

अनुभव विस्तार

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(क) सही शब्द चुनकर जोड़ी बनाइए-

लौहपुरुष	–	बाल गंगाधर तिलक
महात्मा	–	चितरंजनदास
देशबन्धु	–	गांधी
लोक मान्य	–	सरदार पटेल

(ख) दिए गए विकल्पों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ. सरदार पटेल को ..... कहा जाता है।
(शलाका पुरुष, लौह पुरुष)

ब. सरदार पटेल के ..... बचपन से ही प्रकट होने लगे थे।
(प्रमुखगुण, विशिष्ट गुण)

स. उनके पास हाजिर-जबाबी तथा विनोद प्रियता का अक्षय और ..... कोष था।
(असीम, निस्सीम)

द. हठी विद्रोहियों को ..... में लाना उन्हें भली प्रकार आता था।
(अनुशासन, विनयानुशासन)

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

(अ) सरदार पटेल का स्वभाव कैसा था?

(ब) सहायकों तथा अनुयायियों द्वारा भूल करने पर सरदार पटेल क्या करते थे?

(स) सरदार पटेल ने गृहमंत्री के रूप में कौन सा महत्वपूर्ण कार्य किया?

(द) सरदार पटेल की प्रबल आकांक्षा क्या थी?

(इ) पटेल को सरदार की उपाधि कैसे मिली?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न–

(अ) सरदार पटेल को लौह पुरुष क्यों कहा जाता है?

(ब) सरदार पटेल का अपने अनुयायियों के साथ व्यवहार कैसा था?

(स) सरदार पटेल किस गुण के करण अपने विरोधियों को पछाड़ दिया करते थे?

(द) सरदार पटेल हठी विद्रोहियों को कैसे विनयानुशासन में लाते थे?

भाषा की बात–

(1) बोलिए और लिखिए–

व्यक्तिगत, यद्यपि, परिलक्षित, तत्कालीन, सार्वजनिक, प्रशासनिक, उल्लेखनीय, कृपालु, विनोदप्रियता

(2) सही वर्तनी वाले शब्दों पर गोला लगाइए–

परिलक्षित	परलिक्षित	परिलक्षति
दृढ़ता	द्रढ़ता	द्रीढ़ता
ईषर्या	ईर्ष्या	इर्ष्या
व्यक्तिगत	व्यक्तीगत	वयक्तिगत
अवश्यकता	आवश्यकता	अवाश्यकता
नीश्चय	निशचय	निश्चय

■ **ध्यान दीजिए–**

(क)	**(ख)**
घोड़ा दौड रहा है।	घोड़े दौड़ रहे हैं।
लड़का खेल रहा है।	लड़के खेल रहे हैं।
चिड़िया बैठी है।	चिड़ियाँ बैठी हैं।
यह पुस्तक किसकी है?	ये पुस्तकें किसकी हैं?

ऊपर लिखे वाक्यों में देखिए–

घोड़ा, लड़का, चिड़िया, पुस्तक, एकवचन में है, घोडे, लड़के, चिड़ियाँ, पुस्तकें एक से अधिक अनेक होने के कारण बहुवचन में हैं।

3. नीचे दिए शब्दों के बहुवचन बनाइए-

एकवचन	–	**बहुवचन**
साथी	–	.....
मित्र	–	.....
राज्य	–	.....
वर्ष	–	.....
मनुष्य	–	.....
सेनापति	–	.....
भारतीय	–	.....

4 निम्नलिखित शब्दों में उनके सामने दर्शाए प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए-

मूल शब्द	**प्रत्यय**	**बना हुआ शब्द**
साहस	ई	.....
कृति	त्व	.....
गुरू	त्व	.....
अनुकरण	ईय	.....
स्वर्ग	ईय	.....
बच्चा	पन	.....

अब करने की बारी

- सरदार पटेल के जन्म दिन पर अपने विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों में पटेल की जीवनी व उनसे मिलने वाली प्रेरणा पर विचार व्यक्त कीजिए। फेन्सी ड्रेस प्रतियोगिता में सरदार पटेल का रूप धारण कीजिए।
- स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान देने वाले महापुरुषों के चित्रों का संकलन कीजिए व उनसे मिलने वाली प्रेरणाएँ अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।